Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भारतीय अर्थव्यवस्था

(उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग-1

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: UPPM14

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भारतीय अर्थव्यवस्था

(उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

भाग–1

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPPCS DLP विषय सूची (Contents)

1.	**अर्थव्यवस्था : सामान्य परिचय**	**5–24**
1.1	अर्थव्यवस्था : अर्थ एवं प्रकार	5
1.2	भारतीय अर्थव्यवस्था : प्रकृति, विशेषताएँ, वर्तमान प्रवृत्तियाँ एवं चुनौतियाँ	8
1.3	उत्पादन के कारक एवं क्षेत्र	14
1.4	आय का चक्रीय प्रवाह	17
1.5	उत्तर प्रदेश अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ एवं समस्याएँ	19
2.	**बैंकिंग तथा वित्तीय प्रणाली**	**25–79**
2.1	वित्तीय प्रणाली	25
2.2	मुद्रा बाज़ार	28
2.3	बैंकिंग	36
2.4	परिसंपत्तियाँ एवं देयता सृजन	49
2.5	भारतीय रिज़र्व बैंक	56
2.6	शेयर बाज़ार, प्रतिभूति बाज़ार एवं सेबी	62
2.7	भारत में म्यूचुअल फंड एवं बीमा क्षेत्र	66
2.8	डिपॉजिटरी प्रणाली, कमोडिटी एक्सचेंज एवं डेरिवेटिव्स	68
2.9	मुद्रास्फीति एवं अवस्फीति	70
3.	**राष्ट्रीय आय**	**80–101**
3.1	राष्ट्रीय आय : अर्थ एवं अवधारणा	80
3.2	राष्ट्रीय आय को मापने की विधियाँ	85
3.3	राष्ट्रीय आय से संबंधित महत्त्वपूर्ण आयाम	88
3.4	केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय	90
3.5	राष्ट्रीय आय से संबंधित आँकड़े	92
3.6	उत्तर प्रदेश : राज्य घरेलू उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय एवं आय के प्रमुख स्रोत	93
4.	**राजकोषीय नीति एवं बजट व्यवस्था**	**102–158**
4.1	बजट व्यवस्था	103
4.2	लोक ऋण एवं लोक व्यय	112
4.3	केंद्रीय बजट, 2018-19	115
4.4	भारत में कराधान	122
4.5	वस्तु एवं सेवा कर	128
4.6	14वें वित्त आयोग की सिफारिशें	146
4.7	उत्तर प्रदेश बजट, 2018-19	148

5. भारत में आर्थिक नियोजन **159–192**

5.1 नियोजन : अभिप्राय, उद्देश्य, आवश्यकता, विशेषताएँ एवं प्रकार 159

5.2 भारत में आयोजन 163

5.3 योजना आयोग, राष्ट्रीय विकास परिषद, नीति आयोग 164

5.4 पंचवर्षीय योजनाएँ 170

5.5 1991 के बाद हुए आर्थिक सुधार 179

5.6 उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण 180

6. औद्योगीकरण एवं उद्योग पर एल.पी.जी. पॉलिसी का प्रभाव **193–233**

6.1 औद्योगीकरण : परिचय 193

6.2 औद्योगिक नीतियाँ 195

6.3 औद्योगिक नीति, 1991 एवं उसका औद्योगिक क्षेत्र पर प्रभाव 198

6.4 भारत में सार्वजनिक उद्यम : महारत्न, नवरत्न एवं मिनीरत्न श्रेणी-1 एवं श्रेणी-2 203

6.5 सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योग 206

6.6 औद्योगिक वित्त के स्रोत 208

6.7 औद्योगिक रुग्णता 209

6.8 निवेश एवं विनिवेश 213

6.9 औद्योगिक क्षेत्र के विकास से संबंधित योजनाएँ एवं कार्यक्रम 221

6.10 उत्तर प्रदेश में उद्योग 226

7. विदेशी व्यापार **234–255**

7.1 विदेशी व्यापार : सामान्य परिचय 234

7.2 विदेशी व्यापार की संरचना 236

7.3 निर्यात संवर्द्धन 241

7.4 अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौते 244

7.5 विदेशी व्यापार नीति, 2015-20 249

8. भुगतान संतुलन **256–278**

8.1 भुगतान संतुलन : अर्थ एवं अवधारणा 256

8.2 भुगतान संतुलन का महत्त्व 261

8.3 भुगतान शेष प्रबंधन 263

8.4 रुपए की परिवर्तनीयता 266

8.5 विदेशी निवेश 269

8.6 विदेशी पूंजी का नियमन 274

अध्याय
1

अर्थव्यवस्था : सामान्य परिचय
(Economy : General Introduction)

प्राचीन काल में भारतीय अर्थव्यवस्था समृद्ध एवं विकसित थी। मध्यकाल में भारत का व्यापार अरब देशों, दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों तथा यूरोपीय देशों तक फैला हुआ था, लेकिन 18वीं सदी में भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था चरमराने लगी, फलतः वह दयनीय स्थिति में आ गई। लेकिन, स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारतीय अर्थव्यवस्था को एक मिश्रित अर्थव्यवस्था के रूप में गति प्रदान करने तथा विकास की निरंतरता को बनाए रखने हेतु योजनाबद्ध तरीके से प्रयास किया गया। इसी क्रम में वर्ष 1991 में नई आर्थिक प्रणाली लागू कर उदारीकरण एवं निजीकरण को बढ़ावा दिया गया, ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था की संवृद्धि दर बढ़ाई जा सके।

1.1 अर्थव्यवस्था : अर्थ एवं प्रकार *(Economy : Meaning and Type)*

किसी राष्ट्र द्वारा अपने नागरिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करने के उद्देश्य से उपलब्ध संसाधनों का समुचित नियोजन करते हुए, मुद्रा (Money) को केंद्र में रखकर बनाई गई व्यवस्था ही **अर्थव्यवस्था** कहलाती है। 'अर्थव्यवस्था' शब्द को किसी देश के साथ जोड़कर प्रायः पूर्ण बनाया जाता है, जैसे- भारतीय अर्थव्यवस्था, अमेरिकी अर्थव्यवस्था आदि। अर्थव्यवस्था अर्थशास्त्र में व्यापक रूप से प्रयोग होने वाली अवधारणा है जिसका अभिप्राय किसी क्षेत्र विशेष में प्रचलित आर्थिक क्रियाओं की प्रकृति एवं उनके स्तर से होता है। वह क्षेत्र एक गाँव, राज्य या संपूर्ण देश भी हो सकता है।

आर्थिक क्रियाओं के अंतर्गत उत्पादन, उपभोग, निवेश तथा विनिमय को शामिल किया जाता है-

- **उत्पादन (Production) :** उत्पादन का अर्थ आगतों या कारकों को उत्पाद में बदलना है।
- **उपभोग (Consumption) :** अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वस्तुओं और सेवाओं का प्रयोग करना ही उपभोग कहलाता है।
- **निवेश (Investment) :** निवेश से अभिप्राय उत्पादन को आगे बढ़ाने के लिये वस्तुओं, जैसे- भवनों, मशीनों आदि का प्रयोग करना है।
- **विनिमय (Exchange) :** विनिमय से अभिप्राय वस्तुओं और सेवाओं के क्रय एवं विक्रय से है।

अर्थव्यवस्था के प्रकार *(Types of economy)*

अर्थव्यवस्था के विभिन्न प्रकार निम्नलिखित हैं-

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था/बाज़ार अर्थव्यवस्था (Capitalist economy/Market economy)

जिस अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व पाया जाता है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन निजी लाभ के लिये किया जाता है, उसे 'पूंजीवादी अर्थव्यवस्था' कहते हैं। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं वितरण में सरकार की भूमिका न्यूनतम होती है। निजी क्षेत्र द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन एवं वितरण सुनिश्चित किया जाता है एवं बाज़ार की शक्तियों अर्थात् मांग एवं पूर्ति द्वारा इनका मूल्य निर्धारण किया जाता है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक निर्णय लाभ को अधिकतम करने के उद्देश्य से लिये जाते हैं। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के सबसे अच्छे उदाहरण संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जापान आदि विकसित देश हैं। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की विचारधारा एडम स्मिथ की पुस्तक **द वेल्थ ऑफ नेशंस** में 1776 में प्रस्तुत की गई। श्रम विभाजन पर बल देते हुए एडम स्मिथ ने **अर्थव्यवस्था में सरकारी अहस्तक्षेप** (Non-interference by the Government) की नीति अपनाए जाने का समर्थन किया। **अहस्तक्षेप की नीति** (Laissez-faire) के अनुसार वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं वितरण की प्रक्रिया में राज्य/सरकार को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। यह कार्य बाज़ार की शक्तियों अर्थात् मांग एवं पूर्ति द्वारा किया जाना चाहिये।

की पहुँच बहुत कम है जिसके कारण संक्रामक एवं मौसमी बीमारियों के कारण कई लोगों की जान चली जाती है। प्रति लाख आबादी पर अस्पतालों और बेड की उपलब्धता की स्थिति भी बहुत दयनीय है।

- **अकुशल मानव पूंजी (Unskill human capital):** उत्तर प्रदेश में अकुशल श्रमिकों की संख्या अधिक है। यहाँ कौशल शिक्षा के अभाव के कारण न्यूनतम मज़दूरी दर पर श्रमिकों को कार्य करना पड़ता है। इन्हीं कारणों से प्रति व्यक्ति आय में भी अंतर ज़्यादा देखने को मिलता है।
- **अन्य चुनौतियाँ (Other challenges):** प्रदेश में इन चुनौतियों के अलावा भी अन्य कई चुनौतियाँ हैं, जैसे- प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर, ऋण उपलब्धता नहीं होना, संसाधनों के अनुकूलतम प्रयोग का अभाव, वाटर मैनेजमेंट सही नहीं होना, सामाजिक-आर्थिक वंचनाएँ, सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों की अनदेखी आदि।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- भारतीय अर्थव्यवस्था एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है, जबकि उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था है।
- मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी एवं सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों की विद्यमानता होती है।
- बंद अर्थव्यवस्था के अंतर्गत आयात एवं निर्यात बिल्कुल संभव नहीं हैं।
- खुली अर्थव्यवस्था के अंतर्गत बिना प्रतिबंध के वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार होता है।
- पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन स्वतंत्र रूप से होता है।
- व्यावसायिक बौद्धिक पूंजी के स्वामित्व को **ट्रेड मार्क** कहा जाता है।
- निर्माण एवं विनिर्माण द्वितीयक क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।
- कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र, वानिकी, मत्स्यन तथा खनन एवं उत्खनन प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।
- श्रम, भूमि, पूंजी एवं उद्यमशीलता उत्पादन के कारक हैं।
- सकल घरेलू उत्पाद के आधार पर भारत विश्व की सातवीं बड़ी अर्थव्यवस्था है।
- वर्ष 1776 में एडम स्मिथ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' थी।
- बैंकिंग, बीमा, चिकित्सा, शिक्षा, पर्यटन आदि तृतीयक क्षेत्र से संबंधित हैं।
- भारत में जनसंख्या की अधिकता के कारण यहाँ श्रम आधिक्य की स्थिति रहती है।
- व्यापार चक्र का विशुद्ध मौद्रिक सिद्धांत हाट्रे महोदय ने दिया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. अल्पविकसित अर्थव्यवस्था की सामान्यतया विशेषता होती है- **UPPCS (Mains) 2017**

I. प्रतिव्यक्ति निम्न आय
II. पूँजी निर्माण की निम्न दर
III. निम्न आश्रितता अनुपात
IV. तृतीयक क्षेत्र में अधिक कार्यबल शक्ति का होना

नीचे दिये गए कूटों से सही उत्तर चुनिये-

कूट:

(a) I तथा II
(b) II तथा III
(c) III तथा IV
(d) I तथा IV

2. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषताएँ भारतीय अर्थव्यवस्था को विकासशील श्रेणी में दर्शाती हैं? **UPPCS (Mains) 2017**

I. कृषि मुख्य व्यवसाय
II. प्रच्छन्न बेरोज़गारी
III. मानव पूँजी की निम्न गुणवत्ता
IV. प्रोटीन का प्रतिव्यक्ति सेवन उच्च होना

नीचे दिये गए कूटों से सही उत्तर चुनिये-

कूट:

(a) केवल I तथा II
(b) केवल I तथा IV
(c) केवल II तथा III
(d) केवल I, II तथा III

3. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान- **UPPCS (Mains) 2017**
(a) बढ़ रहा है (b) घट रहा है
(c) स्थिर है (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

4. निम्नलिखित में से कौन-सा भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख लक्षण है? **UPPCS (Pre) 2015**
(a) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था
(b) समाजवादी अर्थव्यवस्था
(c) मिश्रित अर्थव्यवस्था
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

5. निम्नलिखित में से कौन-सा भारतीय अर्थव्यवस्था का प्राथमिक क्षेत्र है? **UPPCS (Pre) 2015**
(a) कृषि
(b) उद्योग
(c) सहकारिता
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

6. 'वेल्थ ऑफ नेशंस' के लेखक कौन हैं? **UPPCS (Mains) 2012**
(a) एडम स्मिथ (b) डेविड रिकार्डो
(c) जे.एम. कींस (d) गुर्नार मिर्डल

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
1. उत्पादक उन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने के लिये स्वतंत्र हैं जिनकी मांग अधिक है।
2. उपभोक्ता अपने चयन एवं रुचि के अनुरूप वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदने के लिये स्वतंत्र होते हैं।

उपरोक्त कथन निम्नलिखित में से किस अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ हैं?
(a) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था
(b) समाजवादी अर्थव्यवस्था
(c) मिश्रित अर्थव्यवस्था
(d) अल्पविकसित अर्थव्यवस्था

8. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
1. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में योग्यता और आवश्यकता के अनुसार वितरण के तत्त्व समाविष्ट होते हैं।
2. मांग व पूर्ति समाजवादी अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य नहीं है/हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
1. मिश्रित कीमत क्रियाविधि में बुनियादी निर्णय प्रशासनिक शक्तियों द्वारा तथा गौण निर्णय बाज़ार द्वारा लिये जाते हैं।
2. भारत की अर्थव्यवस्था पूंजीवादी समाजवाद के नज़दीक है?

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य नहीं है/हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

10. उत्पादन के निम्नलिखित कारकों में से किसमें 'जोखिम' की अवधारणा निहित है?
(a) भूमि (b) पूंजी
(c) श्रम (d) उद्यमशीलता

11. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प 'संक्रमणशील अर्थव्यवस्थाएँ' (Transitional economics) कहलाता है?
(a) पहली दुनिया के देश
(b) दूसरी दुनिया के देश
(c) तीसरी दुनिया के देश
(d) चौथी दुनिया के देश

12. आभूषण (Jewellery) उदाहरण है-
(a) भौतिक पूंजी का
(b) वित्तीय पूंजी का
(c) बौद्धिक पूंजी का
(d) कलात्मक बौद्धिक पूंजी का

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-
1. वैज्ञानिक पूंजी या प्रौद्योगिकी पूंजी के स्वामित्व को पेटेंट (Patent) कहा जाता है।
2. व्यावसायिक बौद्धिक पूंजी के स्वामित्व को कॉपीराइट (Copyright) कहा जाता है।
3. कलात्मक पूंजी के स्वामित्व को ट्रेडमार्क (Trade Mark) कहा जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से असत्य हैं?
(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

14. नैसर्गिक संसाधनों के प्रत्यक्ष दोहन द्वारा निर्मित वस्तुओं में परिवर्तन द्वारा नई वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। ऐसी वस्तुओं के उत्पादन में संलग्न संस्थागत संरचना को कहते हैं
(a) प्राथमिक क्षेत्र (b) द्वितीयक क्षेत्र
(c) तृतीयक क्षेत्र (d) चतुर्थक क्षेत्र

15. निम्नलिखित में से द्वितीयक क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है-
(a) विनिर्माण
(b) निर्माण
(c) खनन एवं उत्खनन
(d) जलविद्युत एवं गैस आपूर्ति

उत्तरमाला

1. (a) 2. (d) 3. (b) 4. (c) 5. (a) 6. (a) 7. (a) 8. (c) 9. (d) 10. (d)
11. (b) 12. (b) 13. (b) 14. (b) 15. (c)

अभ्यास प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. एक बाज़ार संचालित अर्थव्यवस्था का क्या अर्थ है? इसकी कमियाँ क्या हैं?
2. भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान प्रवृत्तियों एवं चुनौतियों का उल्लेख करें।
3. अर्थव्यवस्था क्या है? इसकी आर्थिक क्रिया एवं प्रकारों को समसामयिक भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ संदर्भित करते हुए विश्लेषण करें।
4. विकासशील राष्ट्र की विशेषताओं की विवेचना कीजिये। भारतीय अर्थव्यवस्था किस प्रकार विकासशील है?
5. भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति एवं विशेषताओं की विवेचना कीजिये।
6. उत्पादन के कारकों व क्षेत्रों को स्पष्ट करते हुए बताएँ कि किसी भी अर्थव्यवस्था में उत्पादन क्यों महत्त्वपूर्ण है?
7. आय का चक्रीय प्रवाह क्या है? इसके द्वारा हमारी वित्तीय व्यवस्था कैसे प्रभावित होती है? स्पष्ट करें।

अध्याय
2

बैंकिंग तथा वित्तीय प्रणाली
(Banking and Financial System)

बैंक उस वित्तीय संस्था को कहते हैं जो जनता की धनराशि जमा करने तथा जनता को ऋण देने का काम करती है। लोग अपनी बचत राशि को सुरक्षा की दृष्टि से अथवा ब्याज कमाने हेतु इन संस्थाओं में जमा करते हैं और आवश्यकतानुसार समय-समय पर निकालते रहते हैं। बैंक इस प्रकार जमा से प्राप्त राशि को व्यापारियों एवं व्यवसायियों को ऋण देकर ब्याज कमाते हैं। आर्थिक नियोजन के वर्तमान युग में कृषि, उद्योग एवं व्यापार के विकास के लिये बैंक एवं बैंकिंग व्यवस्था एक अनिवार्य आवश्यकता मानी जाती है। दूसरी ओर, वित्तीय प्रणाली से आशय बाज़ार की संस्थाओं से है जो कि अर्थव्यवस्था में बचत को बढ़ाने तथा उसके कुशलतम प्रयोग की ओर गतिशीलता बढ़ाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

2.1 वित्तीय प्रणाली *(Financial System)*

मुद्रा के उपयोग के अधिकार को वित्त कहा जाता है। इससे संबद्ध दो प्रमुख पारिभाषिक शब्द इस प्रकार हैं-

- **वित्तीय विनिमय (Financial exchange):** ऋण लेने एवं ऋण देने की क्रियाओं को वित्तीय विनिमय कहा जाता है।
- **वित्तीय बाज़ार (Financial market):** एक ऐसी संस्थागत व्यवस्था, जिसमें क्रेता एवं विक्रेता नियमित रूप से वित्त का विनिमय करते हैं, वित्तीय बाज़ार कहलाती है।

वित्तीय प्रणाली एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें वित्तीय संस्थाओं, व्यक्तियों, बैंकों, औद्योगिक कंपनियों एवं सरकार द्वारा वित्त की मांग की जाती है तथा इसकी पूर्ति भी की जाती है। भारतीय वित्तीय प्रणाली के दो पहलू हैं- 1. मांग और 2. पूर्ति। मांग व्यक्तिगत निवेशक, औद्योगिक तथा व्यापारिक कंपनियों और सरकार आदि द्वारा की जाती है, जबकि पूर्ति बैंक, बीमा कंपनी, म्यूचुअल फंड एवं अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा की जाती है।

वित्तीय व्यवस्था का महत्त्व निम्नलिखित है-

- वित्तीय व्यवस्था उपलब्ध सभी भौतिक एवं मानवीय साधनों का अधिकतम, मितव्ययी और कुशलतम उपयोग करके लाभ को अधिकतम करने का प्रयास करती है।
- वित्तीय व्यवस्था के माध्यम से ही उत्पादन के तत्त्वों, सामग्री, मशीन, बाज़ार, श्रम और पूंजी की उपलब्धता संभव हो पाती है।
- वित्तीय व्यवस्था द्वारा यह तय कर पाना संभव हो पाता है कि धन का उपयोग कहाँ और कितनी मात्रा में किया जाए।
- लाभांश के रूप में अंशधारकों को कितनी मात्रा में धन का भुगतान किया जाए और कितनी राशि व्यवसाय के लिये रखी जाए।
- वित्तीय व्यवस्था द्वारा कोषों की व्यवस्था एवं उसकी वृद्धि कहाँ से और कितनी मात्रा में की जाए, इसकी व्यवस्था की जाती है।

वित्तीय व्यवस्था के अंग *(Organs of financial system)*

वित्तीय सेवाएँ (Financial Services)

वित्तीय सेवा के अंतर्गत निम्नलिखित सेवाएँ हैं-

- बैंकिग सेवाएँ तथा वित्तीय संस्थान।
- ऋण राहत या सहायता सेवाएँ।
- ऋण उत्पाद और सेवाएँ
- निवेश परामर्श और संभावनाएँ तथा धन बढ़ाने की सिफारिश।
- बीमा उत्पाद, पेंशन और सेवाएँ।

अध्याय
3

राष्ट्रीय आय
(National Income)

राष्ट्रीय आय अर्थव्यवस्था की एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है, जो नीति-निर्माण एवं कल्याणकारी राज्य की दिशा में प्रमुख भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय आय देश की उत्पादन क्रियाओं की माप होती है। राष्ट्रीय आय की गणना के अंतर्गत प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के द्वारा अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलन बनाए रखने व प्राथमिकताओं को स्थापित करने में सहायता मिलती है। राष्ट्रीय आय अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण सूचकांक है। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के आर्थिक निष्पादन की जानकारी का प्रमुख साधन राष्ट्रीय आय है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने के लिये वर्ष 1949 में राष्ट्रीय आय समिति का गठन किया, जिसके अध्यक्ष पी.सी. महालनोबिस थे।

3.1 राष्ट्रीय आय : अर्थ एवं अवधारणा *(National Income : Meaning and Concept)*

राष्ट्रीय आय से अभिप्राय किसी राष्ट्र की एक वर्ष के दौरान आर्थिक क्रियाओं के परिणामस्वरूप उत्पादित अंतिम 'वस्तुओं एवं सेवाओं' के मौद्रिक मूल्य से होता है। दूसरे शब्दों में, किसी एक लेखा वर्ष की अवधि के अंतर्गत किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के बाज़ार मूल्य को राष्ट्रीय आय कहते हैं। राष्ट्रीय आय की गणना में देश के निवासियों द्वारा घरेलू एवं विदेशों से अर्जित आय को सम्मिलित किया जाता है। राष्ट्रीय आय को विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया है-

मार्शल के अनुसार राष्ट्रीय आय (National income according to Marshal)

- राष्ट्रीय आय की गणना वार्षिक आधार पर होती है।
- वार्षिक कुल उत्पादन में से मशीनों की टूट-फूट, घिसावट और उत्पादन संबंधी व्यय आदि को घटा दिया जाता है।
- राष्ट्रीय आय में विदेशी विनियोगों से प्राप्त होने वाली राशि को जोड़ दिया जाता है।
- व्यक्तियों की वे सेवाएँ, जो परिवार के सदस्यों एवं मित्रों को बिना मूल्य प्राप्त हो जाती हैं।
- निजी संपत्ति या सार्वजनिक संपत्ति से प्राप्त लाभ इत्यादि को राष्ट्रीय आय में नहीं जोड़ना चाहिये।

पीगू के अनुसार राष्ट्रीय आय (National income according to Pigou)

राष्ट्रीय आय समाज की वस्तुगत आय होती है, जिसमें विदेशों से प्राप्त आय भी सम्मिलित है, यह वह भाग होता है, जिसको द्रव्य के रूप में मापा जा सकता है।

फिशर के अनुसार राष्ट्रीय आय (National income according to Fisher)

राष्ट्रीय आय में केवल उन सेवाओं को शामिल किया जाता है, जो अंतिम रूप से उपभोक्ताओं को उपभोग के लिये प्राप्त होती हैं, फिर चाहे वे भौतिक वातावरण से प्राप्त हों अथवा मानवीय वातावरण से।

राष्ट्रीय आय से संबंधित विभिन्न अवधारणाएँ *(Various concepts related to National Income)*

बाज़ार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product at Market Price–GDP_{MP})

किसी देश की घरेलू सीमा के अंतर्गत किसी एक वित्तीय वर्ष में सभी निवासी और गैर-निवासी उत्पादक इकाइयों द्वारा बाज़ार मूल्य पर व्यक्त मूल्यवर्द्धनों का योग या संपूर्ण अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का बाज़ार मूल्य ही बाज़ार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है।

- भारत में एक वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक माना जाता है।
- यहाँ देश की घरेलू अर्थात् आर्थिक सीमा के अंतर्गत देश की भौगोलिक, राजनीतिक तथा सामुद्रिक सीमा, वायुमंडल, सीमांतर्गत जलक्षेत्र एवं शेष विश्व में सीमांतर्गत विदेशी अंत:क्षेत्र, जैसे-दूतावास, सैनिक अड्डे आदि शामिल होते हैं।

अध्याय
4

राजकोषीय नीति एवं बजट व्यवस्था (Fiscal Policy and Budget System)

अर्थशास्त्री कींस की पुस्तक **द जनरल थ्योरी ऑफ इंप्लॉयमेंट एंड मनी** में प्रतिपादित विचारों में एक विचार यह भी है कि सरकार को राजकोषीय नीति का प्रयोग निर्गत और रोज़गार को स्थिर करने के लिये किया जाना चाहिये। कींस के अनुसार सरकार को करों तथा व्यय में परिवर्तनों के माध्यम से राजकोषीय नीति द्वारा अर्थव्यवस्था में स्थिरता लाने का प्रयास करना चाहिये।

राजकोषीय नीति : अर्थ *(Fiscal policy : Meaning)*

सार्वजनिक आय, सार्वजनिक व्यय, सार्वजनिक ऋण, करारोपण, बजट घाटे, सब्सिडी और हीनार्थ प्रबंधन या घाटे की वित्त व्यवस्था से संबंधित नीतियाँ 'राजकोषीय नीति' कहलाती है। करारोपण, सार्वजनिक व्यय तथा सार्वजनिक ऋण राजकोषीय नीति के प्रमुख घटक होते हैं। सरकार राजकोषीय नीति के द्वारा निजी क्षेत्रों के लिये संसाधनों की उपलब्धता, संसाधनों का आवंटन तथा आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका इत्यादि को प्रभावित करती है। इस नीति का संचालन सरकार वित्त मंत्रालय की सहायता से स्वयं करती है। राजकोषीय नीति के तहत अत्यधिक मुद्रास्फीति की स्थिति में कम-से-कम घाटे का बजट बनाने तथा कम-से-कम हीनार्थ प्रबंधन का सहारा लेने की नीति अपनाई जाती है, साथ-ही-साथ आवश्यक वस्तुओं से कर को कम या समाप्त कर दिया जाता है। सब्सिडी को भी बढ़ा दिया जाता है, ताकि आधारभूत वस्तुओं तक आम जनता की पहुँच भी हो सके।

जब अर्थव्यवस्था में समग्र मांग एवं व्यय की कमी के कारण मंदी जैसी स्थिति हो तब सरकार राजकोषीय नीति की सहायता से करों में कमी तथा सार्वजनिक व्ययों में वृद्धि के द्वारा समग्र मांग एवं व्यय को बढ़ाने का प्रयास करके मंदी से निकलने की कोशिश करती है। इसके विपरीत जब अर्थव्यवस्था में समग्र मांग एवं व्यय की अधिकता के कारण अभिवृद्धि की स्थिति हो तो सरकार राजकोषीय नीति के माध्यम से सार्वजनिक व्ययों में कमी करके तथा करारोपण में वृद्धि करके अर्थव्यवस्था को संतुलित करने का प्रयास करती है।

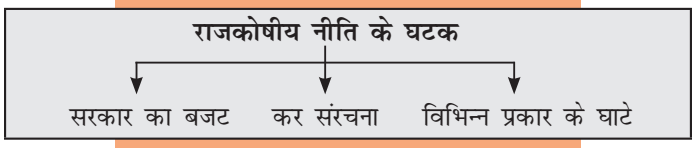

भारत की राजकोषीय नीति *(Fiscal policy of India)*

भारत की राजकोषीय नीति के वृहद् उद्देश्यों के अंतर्गत संतुलित एवं तीव्र विकास, कल्याणकारी राज्य की स्थापना और समाजवादी ढंग के समाज की रचना करना इत्यादि शामिल हैं। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये निम्नलिखित राजकोषीय नीतियाँ अपनाई गईं–

1. ग्रामीण आधार संरचना पर पूंजीगत व्यय में वृद्धि करना ताकि कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ाया जा सके।
2. पूर्ण रोज़गार की स्थिति प्राप्त करने के लिये प्रयास करना।
3. सार्वजनिक क्षेत्र की घाटे में चल रही इकाइयों में विनिवेश की प्रक्रिया जारी रखना।
4. राजकोषीय घाटे को निकट भविष्य में यथासंभव शून्य करना।
5. राजकोषीय घाटे को संघ और राज्य के लिये क्रमशः 3% और 2% से कम करना।
6. महत्त्वहीन वस्तुओं (Non Merit Goods) पर दी जा रही सब्सिडी को कम करना एवं वैसी छिपी हुई सब्सिडी भी घटाना जो समर्थ लोगों को अधिक लाभ पहुँचा रही है।
7. भुगतान संतुलन की स्थिति प्राप्त करने के लिये प्रयास करना।

अध्याय
5

भारत में आर्थिक नियोजन (Economic Planning in India)

आर्थिक नियोजन (आयोजन) योजनाबद्ध तरीके से किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिये आवश्यक है। आर्थिक नियोजन में सामाजिक नियोजन की अवधारणा स्वत: ही सम्मिलित रहती है। भारत में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के साधन के रूप में नियोजन की अवधारणा को स्वीकार किया गया है। भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची की समवर्ती सूची की प्रविष्टि संख्या 20 में 'आर्थिक एवं सामाजिक नियोजन' का उल्लेख किया गया है। आर्थिक नियोजन कल्याणकारी राज्य के उद्देश्यों को प्राप्त करने एवं उन्नति के लिये स्वीकार किया गया है। भारत में आर्थिक विकास की गति को तीव्रतर बनाना नीतिगत कार्यों का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। इसके साथ-ही-साथ विकास के लिये अनुकूल परिवेश तैयार करना तथा लक्षित कार्यों को नियोजित तरीके से पूर्ण करने के लिये नियोजन अनिवार्य है। भारत में आर्थिक नियोजन की शुरुआत 1934 में सर एम. विश्वेश्वरैया ने 'भारत की नियोजित अर्थव्यवस्था' (Planned Economy for India) नामक पुस्तक लिखकर की। यह दस वर्षीय नियोजन था। यह योजना नियोजित आर्थिक विकास की दृष्टि से भारत की प्रथम योजना थी, किंतु आर्थिक कठिनाइयों एवं सरकारी उपेक्षा के कारण यह योजना साकार न हो सकी। सर एम. विश्वेश्वरैया को उनके उल्लेखनीय कार्यों एवं भारत में आर्थिक विकास की रूपरेखा तैयार करने के कारण भारतीय आर्थिक नियोजन का जनक कहा जाता है।

5.1 नियोजन : अभिप्राय, उद्देश्य, आवश्यकता, विशेषताएँ एवं प्रकार *(Planning : Significance, Objective, Requirement, Features and Types)*

नियोजन का अभिप्राय *(Significance of planning)*

राज्य के नेतृत्व में संपूर्ण अर्थव्यवस्था का ऐसा प्रबंधन जिससे राष्ट्रहित की प्राप्ति हेतु उपलब्ध संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग तथा दीर्घकालिक निरंतरता सुनिश्चित हो सके, साथ ही सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये प्राकृतिक, आर्थिक एवं मानवीय संसाधनों का विवेकपूर्ण ढंग से नियंत्रण तथा समन्वय किया जा सके, अवधारणा **नियोजन** कहलाता है।

कल्याणकारी राज्य (Welfare State) में आर्थिक नियोजन द्वारा समाज को विकसित करने का लक्ष्य रखा जाता है। लगभग 200 वर्षों के अंग्रेज़ी शासन के दौरान भारत की अर्थव्यवस्था को जान-बूझकर अल्पविकसित बनाने के उद्देश्य से ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था के साथ इस तरह जोड़ दिया गया था कि भारत की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था पर निर्भर हो गई थी। देश के औपनिवेशिक शोषण (Colonial Exploitation) और अल्पविकास की वजह से जो आर्थिक समस्याएँ पैदा हुईं उनमें बेरोज़गारी और गरीबी (Poverty) सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। अत: बाज़ार-तंत्र पर निर्भर रहकर न तो देश की समस्याओं को हल किया जा सकता था और न ही एक लंबे समय से रुकी हुई विकास-प्रक्रिया को फिर से आरंभ किया जा सकता था। अत: भारत के नीति-निर्माताओं ने प्रारंभ से ही आर्थिक नियोजन का समर्थन किया। इसी पृष्ठभूमि में भारत में 1951 में आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया आरंभ हुई।

नियोजन के उद्देश्य *(Objectives of planning)*

किसी राष्ट्र में नियोजन की आवश्यकता प्रमुख रूप से संतुलित सामाजिक-आर्थिक विकास, विकास के लाभ को समरूप में विस्तृत करने, क्षेत्रीय असंतुलन एवं आंचलिक विषमताओं को दूर करने तथा उपलब्ध संसाधनों के उपयोग को अधिकतम बनाने के लिये होती है। नियोजन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- संसाधनों का सही वितरण सुनिश्चित करना।
- निर्धनता को समाप्त करना।
- बेरोज़गारी दूर करना।
- आधारभूत संरचना का विकास करना।
- कृषि एवं उद्योग का विकास सुनिश्चित करना।
- सामाजिक न्याय के साथ ही साथ विकास की गति को तीव्र करना।

अध्याय
6

औद्योगीकरण एवं उद्योग पर एल.पी.जी. पॉलिसी का प्रभाव (Impact of LPG Policy on Industrialization and Industry)

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिये औद्योगीकरण अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। औद्योगीकरण से अर्थव्यवस्था के ढाँचे में व्यापक एवं दीर्घकालीन परिवर्तन आता है। औद्योगीकरण किसी राष्ट्र की प्रगति एवं संपन्नता का आधार ही नहीं वरन् उसके विकास का मापदंड भी माना जाता है। तीव्र आर्थिक विकास के लिये विकासशील एवं अल्प विकसित राष्ट्रों में औद्योगीकरण को अधिक महत्ता दी जाती है। प्राचीनकाल में भारत शिल्प, वस्त्र, रत्न-आभूषण एवं मसालों आदि के लिये प्रसिद्ध था, परंतु ब्रिटिश काल के दौरान भारतीय उद्योग पूर्णत: गर्त में चला गया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश में उद्योगों के महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए तीव्र औद्योगीकरण हेतु योजनाबद्ध ढंग से प्रयास किया गया। पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आधुनिक उद्योगों की स्थापना की गई। नब्बे के दशक में आर्थिक मंदी का सामना करने के लिये भारत सरकार ने आर्थिक सुधारों हेतु नई आर्थिक नीति को अपनाया। नई आर्थिक नीति के द्वारा भारत में औद्योगीकरण को नई दिशा एवं दशा मिली है।

6.1 औद्योगीकरण : परिचय *(Industrialization : Introduction)*

प्राथमिक उत्पादों को द्वितीयक उत्पादों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया उद्योगों के माध्यम से की जाती है। विभिन्न प्रकार के उद्योगों के क्रमिक एवं तीव्र विकास को ही 'औद्योगीकरण' कहते हैं। यह एक क्रमिक प्रक्रिया है, जिससे धीरे-धीरे सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र के योगदान की अपेक्षा औद्योगिक क्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र का योगदान बढ़ता जाता है। यह कार्य विनिर्माण क्षेत्र द्वारा किया जाता है।

भारत में ब्रिटिश काल के दौरान औद्योगिक विकास को गहरा धक्का लगा। इसलिये स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नियोजकों ने अर्थव्यवस्था के विकास के लिये औद्योगीकरण की आवश्यकता को समझा। किसी भी देश का औद्योगिक विकास उसके आर्थिक विकास का मापक होता है, क्योंकि इस पर कृषि क्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र का विकास निर्भर करता है। औद्योगिक क्षेत्र का विकास जहाँ एक ओर नए रोज़गार एवं आय सृजन के द्वारा अर्थव्यवस्था में मांग का सृजन करता है, वहीं दूसरी ओर देश के तीव्र तथा आत्मनिर्भर आर्थिक विकास की नींव तैयार करने में मदद करता है।

भारत की सतत् आर्थिक संवृद्धि की रफ्तार बनाए रखने के लिये अवसंरचना की सुगठित सुविधाओं की सहायता से उच्च दर पर औद्योगिक संवृद्धि का महत्त्व बहुत ही निर्णायक है। निर्माण क्षेत्र सहित औद्योगिक क्षेत्र भारत के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान करता है और वर्ष 2016–17 में सकल मूल्यवर्द्धन (जी.वी.ए.) में इसका 31.2 प्रतिशत का योगदान रहा। मज़बूत और सुदृढ़ औद्योगिक एवं विनिर्माण क्षेत्र घरेलू उत्पादन, निर्यात और रोज़गार के संवर्द्धन में सहायता करता है और ये सभी अर्थव्यवस्था में उच्च विकास के लिये उत्प्रेरक हो सकते हैं।

केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय के अनंतिम आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2016–17 के लिये सकल मूल्यवर्द्धन (जी.वी.ए.) की समग्र वृद्धि 6.6 प्रतिशत आँकी गई है, जबकि औद्योगिक निष्पादन वर्ष 2015-16 में 8.8 प्रतिशत से कम होकर वर्ष 2016-17 में 5.6 प्रतिशत हो गया है।

2011–12 की स्थिर कीमतों पर सकल मूल्यवर्द्धन वृद्धि दर (प्रतिशत)

	जी.वी.ए.* में हिस्सा	2015-16	2016-17	2017-18	
				Q1	Q2
खनन और उत्खनन	3.0	10.5	1.8	–0.7	5.5
विनिर्माण	18.1	10.8	7.9	1.2	7.0

अध्याय
7

विदेशी व्यापार
(Foreign Trade)

वैश्वीकरण के दौर में विश्व व्यापार एक अपरिहार्य आवश्यकता है। वैश्विक व्यापार में वृद्धि होने से अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक निर्भरता भी निरंतर बढ़ रही है। विदेशी व्यापार का अर्थ दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं एवं सेवाओं का व्यापार होता है। किसी भी देश के विदेशी व्यापार में उसके आयात और निर्यात दोनों घटकों को शामिल किया जाता है। कोई भी देश उत्पादन एवं उपभोग क्षेत्र में पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नहीं होता है, इसलिये विदेशी व्यापार अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विदेशी व्यापार के बिना देश अपनी घरेलू सीमा के भीतर उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं तक सीमित रह जाएंगे। इसी कमी को दूर करने के लिये विदेशी व्यापार की आवश्यकता का जन्म हुआ है। विदेशी व्यापार को विश्व व्यापार या अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भी कहते हैं। विदेशी व्यापार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पारस्परिक सहयोग से एक-दूसरे पर निर्भरता तथा एक-दूसरे की भागीदारी एवं सहायता से आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है।

7.1 विदेशी व्यापार : सामान्य परिचय
(Foreign Trade : General Introduction)

"दो राष्ट्रों के मध्य वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रय-विक्रय को विदेशी व्यापार कहते हैं।" किसी देश के विदेशी व्यापार से उसकी अर्थव्यवस्था की प्रकृति और उसके आकार का पता चलता है। आज विश्व की सभी अर्थव्यवस्थाएँ खुली अर्थव्यवस्थाएँ हैं, खुली अर्थव्यवस्थाओं को विदेशी व्यापार प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। वैश्वीकरण के इस दौर में विदेशी व्यापार की महत्ता बहुत अधिक बढ़ गई है। किसी भी देश के लिये विदेशी व्यापार का महत्त्व निम्नलिखित रूप में है-

1. यह विदेशी मुद्रा अर्जन का प्रमुख साधन है।
2. विभिन्न देशों के मध्य पारस्परिक सहयोग में वृद्धि करता है।
3. आवश्यक वस्तुओं के आयात तथा अधिशेष वस्तुओं के निर्यात से अर्थव्यवस्था में संतुलन स्थापित होता है।
4. बड़े पैमाने पर रोज़गार सृजन करता है।
5. मशीनरी, तकनीक एवं पूंजीगत आयात से अर्थव्यवस्था में दीर्घकालिक मज़बूती आती है।
6. विदेशी व्यापार किसी भी राष्ट्र की उन्नति का महत्त्वपूर्ण कारक है।

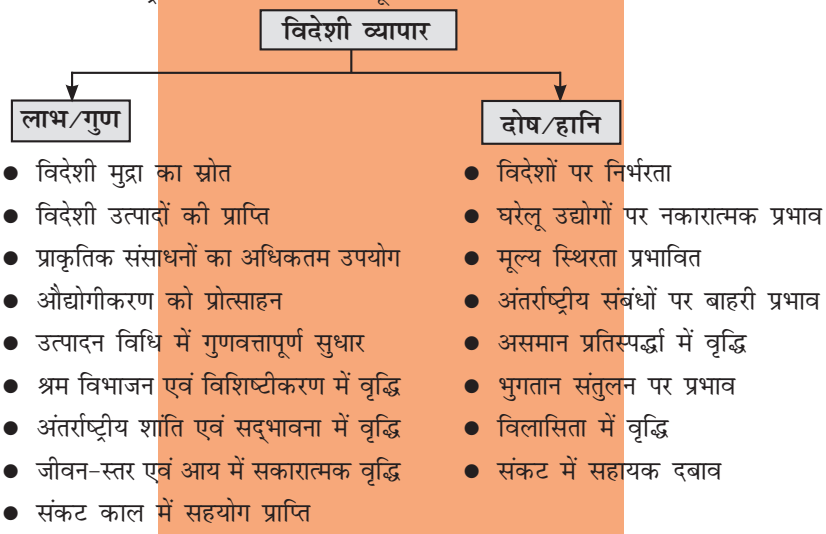

अध्याय
8

भुगतान संतुलन (Balance of Payment)

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास एवं संवृद्धि में उस राष्ट्र के आंतरिक एवं बाह्य व्यापार का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। किसी भी राष्ट्र की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति आंतरिक साधनों एवं क्रियाओं के द्वारा नहीं की जा सकती इसलिये बाह्य या विदेशी व्यापार को अनुकूल रखे जाने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। देश की आर्थिक प्रगति के लिये निर्यात बढ़ाने एवं आयात निर्भरता कम करने का निरंतर प्रयास किया जाता है। निर्यात में वृद्धि भुगतान संतुलन एवं विदेशी विनिमय कोष के लिये भी आवश्यक है। किसी भी देश के विदेशी लेन-देन का पूर्ण विवरण भुगतान संतुलन के माध्यम से ज्ञात होता है। भुगतान संतुलन किसी देश की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को चालू खाते एवं पूंजीगत खातों के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

8.1 भुगतान संतुलन : अर्थ एवं अवधारणा *(Balance of Payment : Meaning and Concept)*

किसी देश का भुगतान संतुलन एक निश्चित अवधि, सामान्यत: एक वित्तीय वर्ष में उस देश और शेष विश्व के साथ उसके सभी व्यापार, जिनके मौद्रिक मूल्य की गणना हो सकती है, का क्रमबद्ध विवरण होता है। दूसरे शब्दों में, भुगतान संतुलन खाते इस प्रकार के खाते होते हैं जिनमें किसी अर्थव्यवस्था अथवा देश का शेष विश्व के साथ सभी प्रकार के मौद्रिक लेन-देन (Monetary Transactions) का लेखांकन दर्ज किया जाता है। इसमें सभी प्रकार के आर्थिक लेन-देन (दृश्य, अदृश्य या पूंजीगत) का समस्त विवरण उपलब्ध होता है।

कोई देश जब विश्व के अन्य देशों को वस्तु एवं सेवाएँ विक्रय करता है तो उसे निर्यात कहते हैं तथा जब दूसरे देशों से वस्तु एवं सेवाओं का क्रय करता है, उसे हम आयात कहते हैं। आयात-निर्यात के दौरान दृश्य मदों एवं अदृश्य मदों के तहत प्रविष्टि की जाती है। दृश्य मदों के अंतर्गत वस्तुओं के आदान-प्रदान तथा अदृश्य मदों के अंतर्गत सेवाओं (पर्यटन, चिकित्सा, कंसल्टेंसी, सॉफ्टवेयर, शिक्षा) के आदान-प्रदान को सम्मिलित किया जाता है। पूंजी खाते के अंतर्गत बैंकिंग जमा, विदेशी ऋण, विदेशी निवेश, आप्रवासियों और एन.आर.आई. जमा आदि को सम्मिलित किया जाता है। यह मौद्रिक लेन-देन वस्तुओं के निर्यात एवं आयात (दृश्य मदें), सेवाओं के निर्यात एवं आयात (अदृश्य मदें), वित्तीय परिसंपत्तियों, जैसे-स्टॉक्स, बॉण्ड्स के अंतर्राष्ट्रीय क्रय-विक्रय, वास्तविक परिसंपत्तियों, जैसे-प्लांट एवं मशीनरी के अंतर्राष्ट्रीय क्रय-विक्रय के कारण उत्पन्न हो सकते हैं। यह लेन-देन जिस खाते में दर्ज किया जाता है, उसे ही 'भुगतान संतुलन खाता' कहते हैं। किंडलबर्गर के शब्दों में, "एक देश का भुगतान संतुलन उस देश के निवासियों तथा विदेशी देशों के निवासियों के बीच में किये गए सभी आर्थिक सौदों का क्रमबद्ध लेखा है।"

इसके दो पक्ष होते हैं- 1. क्रेडिट साइड, 2. डेबिट साइड।

- क्रेडिट साइड में उन मदों को दिखाया जाता है, जिससे विदेशी मुद्रा आती है, जबकि डेबिट साइड में उन मदों को दिखाया जाता है, जिससे विदेशी मुद्रा बाहर जाती है।
- भुगतान संतुलन खाता में दिखाई जाने वाली मदों को दो भागों में बाँटा गया है-

1. *दृश्य मदें (Visible items)*

इसके तहत भौतिक वस्तुओं के आयात-निर्यात को भुगतान संतुलन खाते में वस्तु खाता (Goods A/c) के तहत दिखाया जाता है। सामान्य तौर पर किसी देश के आयात-निर्यात का अर्थ वस्तु खाते से लगाया जाता है अर्थात् किसी देश के आयात-निर्यात का अर्थ दृश्य मदों के आयात एवं निर्यात से होता है और इन दृश्य मदों के आयात-निर्यात का अंतर 'व्यापार संतुलन' (Balance of Trade) कहलाता है।

2. *अदृश्य मदें (सेवाएँ) (Invisible items)*

अदृश्य मदों में सेवाएँ आती हैं और इसके आयात-निर्यात को सेवा खाता (Service A/c) के तहत दिखाया जाता है अर्थात् सेवाओं के आयात-निर्यात का अर्थ है- अदृश्य मदों का आयात-निर्यात।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456